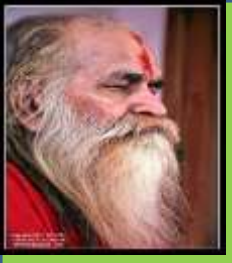

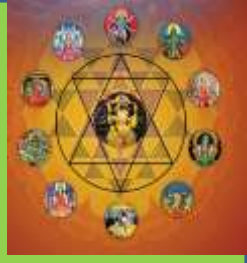

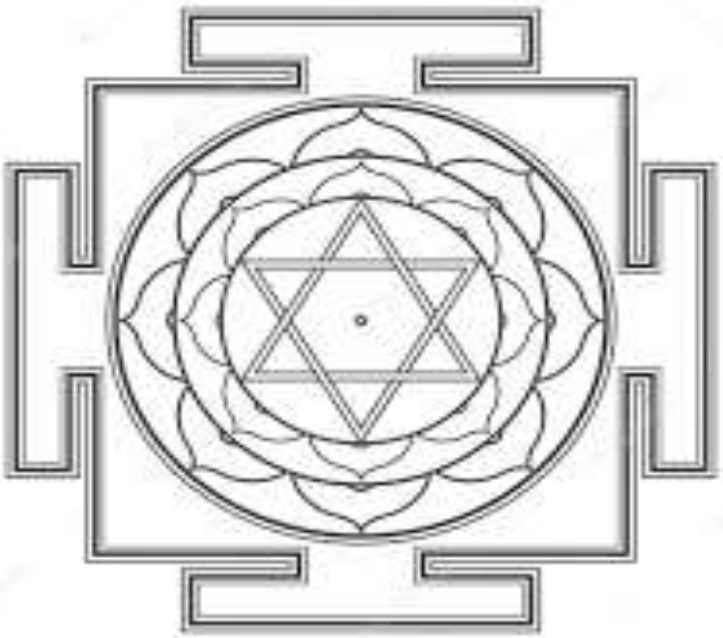

सौजन्य: मां पाताल भैरवी मन्दिर, श्री बर्फानीधाम,
राजनांदगांव, छत्तीसगढ़, भारत

चतुर्थ महाविद्या

माता भुवनेश्वरी

उद्यदहर्द्युतिमिन्दुरीटां तुङ्गकुचां नयनत्रययुक्ताम् ।
स्मेरमुखीं वरदांङ्कुशपाशाभीतिकरां प्रभजेद् भवनेशीम् ।।

(भुवनेश्वरी देवी के देह की कान्ति उदीयमान सूर्य के समान है । उनके ललाट में अर्द्धचन्द्र, मस्तक में मुकुट, दोनों स्तन उन्नत (ऊँचे), तीन नेत्र और बदन में सदा हास्य तथा चार हाथ में वर मुद्रा, अङ्कुश, पाश और अभयमुद्रा विद्यमान है । ऐसी भुवनेश्वरी देवी का मैं ध्यान करता हूँ ।)

मन्त्र परिचय एवं विषय-प्रवेश

ह्रीं: ह=शिव, र= प्रकृति, ई=महामाया, नाद=विश्वमाता और बिन्दु=दु:खहरण । इस प्रकार इस शक्ति बीज या माया बीज का अर्थ होता है-शिवसहित विश्वमाता शक्ति मेरे दु:खों को दूर करें ।

देवीभागवत में वर्णित मणिद्वीप की अधिष्ठात्री देवी ह्रल्लेखा (ह्रीं) मन्त्र की स्वरूपाशक्ति और सृष्टिक्रम में महालक्ष्मीस्वरूपा-आदिशक्ति भगवती भुवनेश्वरी भगवान् शिव के समस्त लीला-विलास की सहचरी हैं । जगदम्बा भुवनेश्वरी का स्वरूप सौम्य और अंगकान्ति अरुण है । भक्तों को अभय और समस्त सिद्धियाँ प्रदान करना इनका स्वाभाविक गुण है । दशमहाविद्याओं में ये चतुर्थ स्थान पर परिगणित हैं ।

देवीपुराण के अनुसार मूल प्रकृति का दूसरा नाम ही भुवनेश्वरी है । ईश्वररात्रिमें जब ईश्वरके जगद्रूप व्यवहार का लोप हो जाता है, उस समय केवल ब्रह्म अपनी अव्यक्त प्रकृति के साथ शेष रहता है, तब ईश्वररात्रि की अधिष्ठात्री देवी भुवनेश्वरी कहलाती हैं । अङ्कुश नियन्त्रण का प्रतीक है और पाश राग अथवा आसक्ति का प्रतीक है । इस प्रकार सर्वरूपा मूल प्रकृति ही भुवनेश्वरी हैं, जो विश्वको वमन करने के कारण वामा, शिवमयी होने से ज्येष्ठा तथा कर्म-नियन्त्रण, फलदान और जीवों को दण्डित करने के कारण रौद्री कही जाती हैं । भगवान शिव का वाम भाग ही भुवनेश्वरी कहलाता है । भुवनेश्वरी के संग से ही भुवनेश्वर सदाशिव को सर्वेश होने की योग्यता प्राप्त होती है ।

महानिर्वाणतन्त्र के अनुसार सम्पूर्ण महाविद्याएँ भगवती भुवनेश्वरी की सेवा में सदा संलग्न रहती हैं । सात करोड़ महामन्त्र इनकी सदा आराधना करते हैं । दशमहाविद्याएँ ही दस सोपान हैं । काली तत्त्व से निर्गत होकर कमला तत्त्व तक की दस स्थितियाँ हैं, जिनसे अव्यक्त भुवनेश्वरी व्यक्त होकर ब्रह्माण्ड का रूप धारण कर सकती हैं तथा प्रलय में कमला से अर्थात् व्यक्त जगत् से क्रमशः लय होकर काली रूप में मूल प्रकृति बन जाती हैं । इसलिए इन्हें काली की जन्मदात्री भी कहा जाता है ।

दुर्गासप्तशती के ग्यारहवें अध्याय के मंगलाचरण में भी कहा गया है कि 'मैं भुवनेश्वरी देवी का ध्यान करता हूँ । उनके श्रीअंगों की शोभा प्रातः काल के सूर्यदेव के समान अरुणाभ है । उनके मस्तक पर चन्द्रमा का मुकुट है । तीन नेत्रों से युक्त देवी के मुख पर मुस्कान की छटा छायी रहती है । उनके हाथों में पाश, अङ्कुश, वरद एवं अभय मुद्रा शोभा पाते हैं ।

इस प्रकार बृहन्नीलतन्त्र की यह धारणा पुराणों के विवरणों से भी पुष्ट होती है कि प्रकारान्तर से काली और भुवनेशी दोनों में अभेद है। अव्यक्त प्रकृति भुवनेश्वरी ही रक्तवर्णा काली हैं। देवी भागवत के अनुसार दुर्गम नामक दैत्य के अत्याचार से संतप्त होकर देवताओं और ब्राह्मणों ने हिमालय पर सर्वकारणस्वरूपा भगवती भुवनेश्वरी की ही आराधना की थी। उनकी आराधना से प्रसन्न होकर भगवती भुवनेश्वरी तत्काल प्रकट हो गयीं। वे अपने हाथों में बाण, कमल-पुष्प तथा शाक-मूल लिये हुए थीं। उन्होंने अपने नेत्रों से अश्रुजल की सहस्त्रों धाराएँ प्रकट कीं। इस जल से भूमण्डल के सभी प्राणी तृप्त हो गये। समुद्रों तथा सरिताओं में अगाध जल भर गया और समस्त औषधियाँ सिंच गयीं। अपने हाथ में लिए गये शाकों और फल-मूल से प्राणियों का षोषण करने के कारण भगवती भुवनेश्वरी ही 'शताक्षी' तथा 'शाकम्भरी' नाम से विख्यात हुईं। इन्होंने ही दुर्गमासुर को युद्ध में मारकर उसके द्वारा अपहृत वेदों को देवताओं को पुनः सौपा था। उसके बाद भगवती भुवनेश्वरी का एक नाम दुर्गा प्रसिद्ध हुआ। भगवती भुवनेश्वरी की उपासना पुत्र-प्राप्ति के लिए विशेष फलप्रदा है। रुद्रयामल में इनका कवच, नीलसरस्वतीतन्त्र में इनका हृदय तथा महातन्त्रार्णव में इनका सहस्त्रनाम सङ्कलित है।

भक्तों को अभय एवं समस्त सिद्धियां प्रदान करना भगवती भुवनेश्वरी का स्वाभाविक गुण है। इनकी उपासना तीन क्रम में होती है, 1. एकाक्षरी भुवनेश्वरी, 2. त्र्यक्षरी भुवनेश्वरी एवं पञ्चाक्षरी भुवनेश्वरी। भुवनेश्वरी की शक्ति धरणी-पृथ्वी है। भुवनेश्वरी के एकाक्षर मन्त्र के ऋषि शक्ति, छन्द गायत्री, देवता भुवनेश्वरी, बीच ह्कारो, शक्ति ईकार एवं कीलक रेफ है। इस प्रकार एकाक्षर मन्त्र **'ह्रीं'** है। त्र्यक्षरी मन्त्र **'ह्रीं ॐ ह्रीं '** है। पञ्चाक्षरी मन्त्र **'ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं'** है। श्री भुवनेश्वरी का बीजमन्त्र ह्रीं देवी प्रणव के रूप में प्रसिद्ध है तथा भावभेद से अनेक मन्त्रों के साथ इनका स्मरण होता है। श्री भुवनेश्वरी के यन्त्र में मध्य मे षट्कोण, उसके बाद अष्टदल पद्म, उसके बाद षोडश दल कमल और चतुर्द्वार युक्त भूपुर होता है। भगवती भुवनेश्वरी को राजराजेश्वरी भी कहा जाता है। इनके भैरव सदाशिव हैं, कहीं-कहीं पर इनके शिव 'त्र्यम्बक' भी बतलाये गये हैं। भुवनेश्वरी को ललिता भी कहते हैं। भगवान शिव ने ललिता नाम से भगवती के दो आम्नाय विभाजित किये, एक पूर्वाम्नाय एवं दूसरा ऊर्ध्वाम्नाय। ललिता शब्द सुन्दरी का पर्याय है, इसलिए ललिता शब्द से जब त्रिपुरसुन्दरी समझी जाती है तब वह 'श्रीविद्या ललिता' होती हैं और जब वही ललिता भुवनेश्वरी की बोधक होती है तो वह 'भुवनेश्वरी ललिता ' समझी जाती है। भगवती भुवनेश्वरी की उपासना मुख्यतः वशीकरण, सम्मोहन, वाक्सिद्धि, सौभाग्यलाभ एवं शत्रुओं पर विजय पाने के लिए किया जाता है। भगवती के हाथों में अङ्कुश और पाश का होना उनकी शासन-शक्ति का परिचायक है, ये तीनो लोकों पर दृष्टि रखती है इसलिए इनके त्रिनेत्र भी हैं। समस्त संसार को एवं सभी योनियों को इन्हीं से अन्न प्राप्त होता है इसलिए ये वरदा स्वरूपा है। समस्त भुवनों को उत्पन्न कर उनका संचालन करने की शक्ति होने के कारण ये भुवनेश्वरी कहलायीं।